एतत्प्रार्थ्यं ममबहुमतं जन्म जन्मांतरेऽपि
त्वत्पादांभोरुह युगतानिश्चला भक्तिरस्तु ॥६॥

पृ० ५ हे भगवन् अनित्य सुख देने वाले कर्मों में और धन संचय में वा काम भोगों में मुझे विश्वास नहीं है जो कुछ सुख व दुःख होना है वह पूर्व कर्मों का फल अवश्य होना है परंतु मेरी प्रार्थना करनी इतनी बहुत है कि मेरी प्रत्येक जन्म में आपके चरण कमलों में निश्चल भक्ति होवे ।

दिविवा भुविवा ममा स्तु वासो
नरके वा नर कान्तक प्रकामम्
अवधी रित शारदार विंदो
चरणौ ते मरणेपि चिंत यामि ।७॥

हे नर कांतक मुझे स्वर्ग में अथवा नरक में अन्य
तरह वास हो परंतु आप के जो चरण कमल शरद् ऋतु
के कमलों को तिरस्कार करने वाले ऐसे महा सुंदर चरण
पृ० ६ कमलों का मैं मरण प्रयंत ध्यान करता रहूँ।

सर सिजन यने सशङ्ख चक्रे
मुर भिदि माविर मेह चित्तरंतुम्
सुखतर मपरं नजातु जाने
हरिचरण स्मरण मृतेम तुल्यम् ॥८॥

हे मन जो शंख चक्रधारी कमल नेत्र मुरासुर के
मारने वाले भगवान् के चरण कमलों से तूं चंचल मत
हो हरिचरण स्मरण सुख से, पर मैं नहीं जानत। कि

अन्य कोई अमृत हैं सारा विषय सुख अनित्य हैं।

माभैर्मन्द मनो विचिंत्य बहुधा यामेश्चिरं
यातना नामीनः प्रभवंति पापरिपवः
स्वामी ननुः श्रीधरः आलस्यं विपनीय
भक्ति सुलभं ध्यायसु नारायणम्
लोकस्य व्यसना पनो धन करो दासस्य किंन क्षमः

पृ० ७

हे मूढ मन तूं बहुत प्रकार यम यातना सोचते सोचते भयभीत मत हो जाओ यह दुर्बल पाप रूपी शत्रु हम को यम यातना देने में समर्थ नहीं है जो हमारा स्वामी दयालु, श्रीधर सामान्य अज्ञानीयोंका दुःख दूर कर देता है क्या वह भक्तवत्सल भगवान् अपने अनन्य शरण भक्तों के

दुःख दूर करने में समर्थ नहीं है अपितु है तस्मात् तूम आलस्य प्रमाद को त्याग के भक्ति सुलभ नारायण के दिन रात केवल ध्यान में मग्न हो हे मन।

पृ० ८

भवजलधिमगाधं दुस्तरं निन्तरीयं
कथ मह मितिचेतो मास्मगः। कातरत्वं
सर सिज दृशि देवे तावकी भक्तिरेका
नरक भिदि निषणा तारयिष्यत्यवपूयम् ॥१०॥

हे मन तुम दीन मत हो जाओ कि मै किस प्रकार इस कठिन पारावार रहित संसार सागर से पार हो जाऊं हे मन तुम धीरज धर उस कमल नयन भगवान् की, जो नरक दुःख काटनेमें बहुत निपुण है वही भक्ति इस घोर भव

त्रिध से अवश्य पार करेगी।

तृष्णा तोये मदनपवनोद्धूत मोहोर्मि माले
दारावर्ते तनयसहज ग्राहसंघाकुलेच
संसाराख्ये महतिजलधौ मज्जतांन स्त्रिधामन्
पादांभोजेवरदभवतो भक्तिनावेप्रसीद ॥११॥

पृ० ६

हे वर देने वाले भगवन् हे भूत, भविष्य, वर्तमान काल के स्वामी इस कठिन संसार में जिस में तृष्णा रूपी जलवरा है और काम रूपी पवन से पैदा होने वाले राग रूपी तरंग स्त्री रूपी आवर्त (चक्कर वाला पानी) और पुत्र व भाई मगर मछों से व्याकुल ऐसे भयानक सागर में डूबे होये हम दीन दुखियों के ऊपर दया दृष्टि से अपने

चरण कमलों की भक्ति नौका देने से हमको पार करो।

पृथ्वीरेणुरणुपयांसिकणिकाः फल्गु स्फु
लिङ्गा लघु स्तेजो निःश्वसनं मरुत्तनुतरं
रंध्रं सु सूक्ष्मं नमः क्षुद्रा रुद्र पितामह
प्रभृतयः कीटा समस्ता सुराः दृष्टेयत्र
ततावको विजयते भूमा व धूतावधिः ॥१२॥

पृ० १०

इतनी सशैल वन कानन सहित पृथ्वी भी एक छोटा मृत्तिका पिंड जैसा मालूम होता है सप्त समुद्र सारे एक जल का बूंद जैसा महान् अग्नि एक तुच्छ चिनगारी जैसा यह महा आकाश सूक्ष्म सुई जैसा रंध्र मालूम होता है क्षुद्र जीव जैसे रुद्र ब्रह्मा वगैरह मालूम होते हैं

कीट जैसे सारे देवगण नजर आते हैं जिस अवस्था में आपका जय शील भूमा व्यापक ब्रह्म भाव देखा है वही सर्वोत्कर्ष आप है।

पृ० ११

आम्नाया भ्यसिता न्यरुणयरुधितं
कृच्छ्र व्रतान्यन्नहं मेधच्छेद फलानि
पूर्तविधयः सर्वेहुतं भस्मनि तीर्थाना
मवगा हना नि गजस्नानं विना यत्पद
द्वंद्वा भोरुह सं स्तुतिं विनयते देवः स नारायण

हे भगवन् आपके चरण कमलों की भक्ति बिना शास्त्र अभ्यास घोर जंगल में रोदन जैसा है और कृच्छ्र चांद्रायणा दिवृत केवल चरबी को ही सुकाने वाले और पूर्त

कर्म यज्ञ सदा व्रत धर्मशाला वगैरह यह सब क्रिया भस्मा
हुती के समान निष्फल हैं और तीर्थ स्नानादि कर्म वह
सारे गज स्नान जैसे व्यर्थ हैं यह सब आपके चरण कमल
पृ० संस्तुति के बिना निष्फल है वही देव नारायण आप
१२ जय शील हैं। ॥१३॥

आनन्द गोविन्द मुकुन्दराम
नारायण नंत निरा मयेति
वक्तुं समर्थोपि नवक्ति कपि
दहो जनानां व्यसनानि मोक्षे ॥१४॥

कोई दुर्भाग्य पुरुष हे आनन्द रूप हे गोविन्द हे मुकुंद
हे नारायण हे निरामय हे अनन्त ऐसे भगवत् के नामो-

कारण में समर्थ होके नहीं कहता है अहो बड़ा कष्ट है कि विषयों का स्नेह कितना मुक्ति का प्रतिबन्धक है।

पृ० १३

क्षीर सागर तरङ्ग सीकरा
सार तार कित चरु मूर्तये
भोगि भोग शयिनीय शायिनी
माधवाय मधुविद्विषे नमः ॥१५॥

जो विष्णुः भगवान् क्षीर सागर में कोमल शेष शय्या पर सोये हुये हैं जिस के कोमल श्याम सुन्दर शरीर पर क्षीर सागर से उठी होये छोटे छोटे जल के कन्ने मोती जैसे मालूम होते हैं ऐसे मधवा सुर मारने वाले श्री लक्ष्मी-पते भगवन् को मैं नमस्कार करता हूं।

वात्सल्यादभय प्रदान समया दार्तार्ति
निर्वापणादौदार्यादघ शोषणा दम
नित श्रेयः पद प्रापणात् सेव्यश्री
पृ० पतिरेव सर्वजगता मेकांततः
१४ साक्षिणः प्रह्लादश्च विभीषणश्च
करि राड पंचाल्य हल्या ध्रुवः ॥१६॥

प्यार करने के वास्ते अभय देने के वास्ते समय पर आर्ति दुःख दूर होने के वास्ते और उधार करने के वास्ते पाप दूर करने के वास्ते अटल पदवी देने के वास्ते सब जनों को यही केवल लक्ष्मीपते विष्णु भगवान् ही सेवा करने योग्य हैं इन पांच स्थानों पर पांच भक्त जन दृष्टांत

है प्रह्लाद विभीषण गजेंद्र द्रौपदी अहल्या और ध्रुवजी हैं।

नाथे श्रीपुरुषोतमे त्रिजगता मेका
धिपे चेतसा सेव्ये सुस्य पदस्यदातरि
परे नारायणे तिष्ठति यंकं चित्पुरुषा
धमं कतिपय ग्रामेशमल्यार्थदं
सेवायै मृगया महे नरम हो मूढा वराका वयम्

पृ० १५

भक्ति सुलभ त्रैलोकी का स्वामी सर्व श्रेष्ठ एक पुरषोत्तमनाथ को जो केवल चित् से सेका करने योग्य हैं और अपने पद वैकुंट के देने वाले नारायण भगवान् को त्याग के अन्य किसी पामर पुरुष को कतिपय ग्रामा धीश को और यत्किंचित् धन देने वाले को हम मूढ़ नर पशु सेवा

करने के वास्ते पीछे पीछे दौड़ते हैं अहो बहुत खेद है ऐसे पापी कम बुद्धिवाले हम लोग हैं।

पृ० १६

हेलो काः शृणुत प्रसृति मरण
व्याधे चिकित्सा मिमां योग ज्ञाः
समुदा हरंतिमुनयो यांया ज्ञ्यवल्का
दयः अन्त ज्योंतिरमेय मेकममृतं
कृष्णाख्य मापीयतां तत्पीतंपरमौषधं
वितनुते निर्वाण मात्यंतिकम्

हे लोगों सुनो जन्म मरण नाम व्याधिका सुगम औषधिका सेवन करने का प्रकार जिस चिकित्सा को योगी याज्ञ्य वल्क्यादिक मुनीश्वर कहते हैं जो सब प्रकाश रूप

अप्रमेय एक अमृत कृष्ण स्मरण नाम औषध है उस को पान करते रहो जब परम श्रेष्ट कृष्ण रसायण पीया होवे तो जन्म मरण कष्ट दूर होके आनन्द घन बना के दुःख रहित परमानन्द मुक्ति विसारेगा फिर इस घोर संसार में शरीर धारी नहीं होवेगा।

पृ० १७

बद्धेनां जलिना नतेन शिरसा
गात्रैः सरोमोद्गमैः कंठेन सुरगद्गदेन
नयनो द्गीर्णेन वाष्पाम्बुना नित्यं
त्वच्चर णार बिंद युगल ध्याना मृता
स्वाधिना मस्माकं सरसी रुहा क्षसततं सं पद्यतां जीवितम्

हे कमल नयन भगवन् हम आपके दासों को इस

प्रकार आयु व्यतीत होवे शुद्ध आसन में ब्रह्मांजलि बांध के
व नत मस्तक व रोमांच वाले अंगों सहित गद गद कण्ठ
सुर से नेत्रों से आनन्द अश्रु की धारा बहती रहे हम नित्य
पृ० निरंतर आप के चरण कमलों के ध्याना मृत आस्वादन कर
१८ ने से तन्मय हो जावे कि हमको इस कुत्सित शरीर की
सुधन रहे यह ही हम दासों की प्रार्थना है ॥१९॥

तत्वं भुवाणनि परं परस्मा दहो
क्षरं तीव स्तुदां पदानि आवर्तय प्रांजलि
रस्मि जिह्वे नामानि नारायण गोचराणि ॥२०॥

सत्य स्वरूप को जानाने वाले परम अमृत को देने वाले
आश्चर्य को बढाने वाले जो नारायण के नाम हैं उन्हीं

पवित्र नामो का जो उच्चारण करते करते अमृत को आ-
स्वादन करने वाले नारायण के स्वरुप प्रतिपादक हे जिह्वे
मैं हाथ जोड़ के प्रार्थना करता हूँ तू सदा उन ही नारायण
पृ० १६ नामों का कीर्तन करते रहो ।

इदं शरीरं परिणाम पेशलं
पत त्यव श्यं श्लथ संधिजर्जरम्
किमौषधैः क्लिष्य सि मूढ़ दुर्मते
निरामयं कृष्ण रसायनं पिव ॥२१॥

यह स्थूल शरीर षट विकारों से ग्रसित अवश्य नाश
को प्राप्त होने वाला है और यह शरीर अन्तर बाहिर हाड़
मास रुधिर से वरे हुए नाड़ियों से जर जरित हैं ऐसे नश्वर

शरीर के वास्ते पुष्टिदायक औषधिया ढूंढने के वास्ते किधू कर दुःख को प्राप्त होता है हे मूढ़ दुर्मते तू निरामय कृष्ण रसायन पीकर जरामरण रहित हो जावे।

पृ० २०

श्रीमन्नाम प्रोच्चनारायणा ख्यं
केन प्राप्तावां छितं पापिनोपि
हानः पूर्वं वाक प्रवृत्ता नतस्मिं
स्तेन प्राप्तंगर्भवासादि दुःखम् ॥२०॥

श्रीमान् आनन्दायक नारायण नाम जपने से कौन पापी अजा मिलादिक वैकुंठ सुख को नहीं प्राप्त होये अहो बड़ा खेद है कि हम को पूर्व जन्म में भगवन्नाम जपने में मन वाणी प्रवृत्त नहीं हुई इस करके हम लोगों को माता

के गर्भ में दुःख भोगना पड़ा।

मादृक्षं क्षीण पुण्यां क्षणमपिभवतो
भक्तिहीनान्यदां वजे माश्रौषं श्राव्य
पृ० वद्धं तवचरितमपा स्या न्यदा रुवान
२१ जातम् मस्माक्षं माधपत्वा मषिभुवन
पते चेतसा पह्नुवानां माभूवंत्वत्स
यर्यां व्यतिकर रहितो जन्म जन्मांतरेपि ॥२३

मैं इन अपने नेत्रों से क्षण मात्र भी उन भक्ति हीन पापियों का दर्शन नहीं करना चाहता हूँ जो आपके चरण कमलों के भक्ति रहित हैं और मैं आपकी कथा के बिना अन्य काव्य नाटकादिक अपने कानों से नहीं सुनना चाहता

हूँ और हे लक्ष्मीपते जो पापी पुरुष आप की श्याम सुन्दर मूर्ति का मन से ध्यान नहीं करते हैं हे भवनपते मैं उनका अपने त्वचा से स्पर्शन करुँ हे भगवन् प्रत्येक जन्म में आप के चरण कमलों की पूजा से रहित नहीं होना चाहिये ।

पृ० २२

मदनपरिहर स्थितिं मदीये मनसि
मुकुन्द पदार विंदधाम्नि हरनयन
कृषाणुना कृशोसि स्मरसि न
चक्र पराक्रमं मुरारे ॥२४॥

हे मदन काम तू इस मेरे मन मन्दिर में जहा मुक्ति देने वाले मुकुन्द भगवान् का आसन जमां है वहां से चला जा क्या तू वही काम है कि जो शिवजी के तीसरे नेत्र से

दग्ध हुआ था हे काम तू बड़ा डीठ है तुझे मेरे स्वामी विष्णुः भगवान् के चक्र का पराक्रम याद नहीं आता है ।

पृ० २३

दारावाराकर वर सुता तेङ्ग जो यं विरिंचिः
स्तोता वेदा स्तव सुरगणे भृत्यवर्ग प्रसदा
मुक्तिर्मध्ये जगदवि कलं तावकी देव
कीर्ति माता मित्रं बल रिपु सुता तत्त्वतोन्यन्नजाने

हे भगवन् आपकी स्त्री क्षीर समुद्र कन्या लक्ष्मी जी हैं पुत्र आपके ब्रह्मा जी हैं आपके बाठ जैसे स्तुति करने वाले चारों वेद हैं भृत्यवर्ग आपके इन्द्रादि देवगण हैं आपका प्रसाद जगत् में दुःख रहित सुख रूप मुक्ति देना माता आपकी देवकी जी हैं परम सखा अर्जुन देव आपके मित्र

हैं ऐसे परिवार वाले विष्णु भगवान् से हम और कोई जानता नहीं ।

जिह्वेकीर्तय केशवं मुर रिपुं चेतोभज
पृ० श्रीधरं पाणिद्वंद समर्चया च्युत कथा
२४ श्रोत्रद्वय त्वंशृणु कृष्णं लोकय लोचन
द्वयहरे गच्छांघ्रियुग्मालयं जिघ्र
घ्राण मुकुन्द पाद तुलसी मूर्धन्नमा धो क्षजम् ॥२६॥

हे जिह्वे तू मुरासुर मारने वाले केशव जी का कीर्तन करते रहो हे मन तू लक्ष्मीपते का सदा ध्यान करते रहो हे हस्त युगल तू अच्छे प्रकार भगवान् की पूजा करते रहो हे श्रोत्र युगल तू नित्य श्री कृष्णचन्द्र की कथा सुनते

रहो हे नेत्र युगल तू मोर मुकुट वंशी धारे वन माली
पीतांबर धारी कृष्ण जी का दर्शन करते रहना हे अघ्रियुगल
तू सदा ही भगवत् मन्दिर व संत पुरुषों के परिक्रमामें फिरते
पृ० रहो हे घ्राण युगल तू मुकुंद पाद तुलसी की सुगंधि लेते रहे
२५ हे सिर तू सदा अधोक्षज भगवान् के प्राण में सदा लग्न हो।

यत्कृष्ण प्रणिपात धूलिधवलं
तद्वै शिरः स्याच्छुभं तेनेत्रे वपसो
जिते सुरुचिरे याभ्यांहरि दृश्यते
सावुद्धि र्नियमै यमैश्च विमला
यामा धवध्वायिनी साजिह्वा
मृतवर्षिणी प्रतिपदं यास्तौति नारायणम् ॥२७॥

वही उत्तम शिर है जो कृष्णांघ्रि व संत पाद्य धूलि से
अंकित होवे वही नेत्र अज्ञानवि मिर से रहित हैं जिनसे हरि
पृ० भगवान् अथवा संतजन का दर्शन करे वही बुद्धि सतो गुणी
२६ यम नियमों से मल विक्षेप रहित है जो माधव कमला पतिका
ध्यान करने वाली है वही जिह्वा अमृत को वर साती है जो
अविक्षण नारायण जी की स्तुति गाती हैं

भक्तद्वे षिभुजङ्गगारुडमणि स्त्रैलोक्य
रक्षामणि गोपीलोचन चातकेंबुद
मणि सौंदर्य मुद्रामणिः श्रीकांता
मणि रुक्मणीगस कुच द्वंद्वैकभूषा
मणिः श्रेयोध्येय शिखमणिरिशि तुनो गोपाल चूड़ामणी

जो संत वैरी सर्प जैसे हैं उन के लिये भगवान् गरुड़ मणि जैसे विष दूर करने वाले हैं भगवान् त्रिलोकी की रक्षा करने वाला चिंतामणी हैं गोपियों के नेत्र रूपी चातक पक्षी
पृ० २७ का कृष्ण भगवान मेघ रूपी मणि हैं भगवान् समिष्टि सौंदर्य का एक खजाना है स्त्रियों में श्रेष्ठ स्त्री रत्न रुक्मणि जी के जो सुन्दर स्तन युगल हैं भगवान् कृष्ण जी उनका भूषण जैसा है ऐसा जो ध्यान योग्य श्रेष्ठ चिंतामणी रत्न सर्व काम देने वाला हम अपने दासों को गोपाल चूड़ामणि भगवान कल्याण करे।

शत्र च्छेदैक मंत्रं सकल मुनिमनो

द्वाक्य संपूज्य मन्त्रं संसारोत्तार मन्त्रं

समुदित तमसां संग निर्याणमन्त्रम् — अलि से
सर्वैश्वर्यैकमन्त्रं व्यसन भुजग संदष्ट
संत्राण मन्त्रं जिह्वे श्री कृष्ण मन्त्रं
जय जय सततं जन्म साफल्य मन्त्रम् ॥२९॥

शत्रों को छेद करने वाला सकल उपनिषत् वाक्यों से पूज्य मन्त्र सँसारसे पार करने वाला और अज्ञानी तमो गुणी जनोंसे और उनके सँगतिको दूर करने वाला मन्त्र कल्प सब ऐश्वर्यको देने वाला मन्त्र राग द्वेष व्यसन सर्पोंसे रक्षा करने वाला मन्त्र हे जिह्वे ऐसा महापवित्र श्रीकृष्ण मन्त्र और जन्म सफल करने वाला महामन्त्र तू सदा ही जपते रहो।

व्यामोहोद्दलनौषधं मुनिमनो वृत्ति प्रवृत्योषधं

दैत्यानर्थ करौषधं त्रिभुवने सञ्जी
वनै कौषधम् भक्तार्त्ति प्रशमौषधं
भवभय प्रध्वन्सि दिव्यौषधं

पृ०
२९ श्रेयः प्राप्तिकरौषधं पिव मनः श्रीकृष्ण नामौषधम्

हे मन राग द्वेष मोह रूपी नशेको उतारने वाले सन्त महाजन मनसे वित और काम क्रोध राक्षसोंको अनर्थ करने वाला त्रैलोकीमें सञ्जीवनी जैसे औषध और भक्त रक्षक सँसार भवनाशक ऐसी मुक्ति सुखको देनेवाला दिव्य औषध श्रीकृष्ण नाम औषध तू नित्य निरन्तर पान करते रहो।

आश्चर्य मेत द्धिमनु ष्यलोके
सुधां परित्य ज्य विषं पिवन्ति

नामानि नारायण गोचरांणि पठि से
त्यक्त्वान्य वाचा कुहकाः पठन्ति ॥३१॥

पृ० अहो बड़ा ही आश्चर्य है कि उत्तम मनुष्य लोकमें जन्म
३० लेके भी जो सत् शास्त्र प्रतिपाद्य नारण के नाम अमृत देने
वाले साक्षात् अमर करनेवाले ऐसे अमृत रूप शास्त्रोंको छोड़
के विषरसवरे होये जन्म २ मारने वाले वेश्या स्त्री चरितसे
भरे होय काव्य नाटकादिक ही पड़ते हैं।

लाटी नेत्रपुटी पयोधर घटी
क्रीड़ा कुटी दा स्तटी पाटीरद्रुम
वर्णनेमक विमि मूँढै दिनं नीयते
गोविंदेति जनार्दनेति जगतां